'[illegible] [illegible] और नयी' पाठ के आधार पर नामवर सिंह की [illegible] [illegible] स्पष्ट कीजिए।

[This question paper contains 6 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 6398 **A**

Unique Paper Code : 12051601-OC

Name of the Paper : हिंदी आलोचना

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi – CBCS**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गद्यांशों के संदर्भ को स्पष्ट करते हुए व्याख्या कीजिए :- (10 + 10 + 10)

(क) बीज भाव के द्वारा स्फुरित भावों में कोमल और मधुर-कठोर और तीक्ष्ण दोनों प्रकार के भाव रहते हैं। यदि बीज भाव की प्रकृति मंगल विधायिनी होती है तो उसकी व्यापकता और निर्विशेषता के अनुसार सरे प्रेरित्त भाव तीक्षण और कठोर होने

P.T.O.

पर भी सुंदर होते हैं। ऐसे बीज भाव की प्रतिष्ठा जिस पात्र में होती है उसके सब भावों के साथ पाठकों की सहानुभूति होती है। अर्थात पाठक या श्रोता भी रस रूप में उन्हीं भावों का अनुभव करते हैं, जिन भावों की यह व्यंजना करता हैं।

अथवा

दोनों बातें एक साथ नहीं चल सकतीं। एक तरफ व्यक्ति, मानव की महिमा पर अखण्ड विश्वास ने एक ही राष्ट्र में सुविधाभोगी व्यक्ति - मानवों को बढ़ावा दिया, दूसरी तरफ राष्ट्रीयता की देवी युवावस्था की देहली पर पहुँच कर ईर्ष्यालु रमणी साबित हुई, जो सारे परिवार को ही ले डूबती है। संसार में एक ली राष्ट्रीयता ने सिर उठाया, दूसरी ओर मानवतावाद के विकृत चिंतन ने उस विकृत मतवाद को जन्म व अनुसार मनुष्यों में भी दो श्रेणी के मनुष्य हैं - एक उत्तम, दूसरा निकृष्ट. एक में देवत्व की संभावनाएँ हैं और दूसरे में पशुता से कोई विशेष अंतर नहीं है।

(ख) आज की कविता, किसी - न - किसी प्रकार से, अपने परिवेश के साथ द्वंद्व - स्थिति में उपस्थित होती है, जिसके फलस्वरूप यह आग्रह दुर्निवार हो उठता है कि कवि - हृदय द्वंद्वों का भी अध्ययन करें। अर्थात वास्तविकता में बौद्धिक दृष्टि द्वारा भी अंत: प्रवेश

दुर्लभ होता है। व्यक्ति और समूह अलग - अलग होकर भी कहीं किसी समग्र यथार्थ में समन्वित हैं और परस्पर सम्बद्ध होकर भी उनका गतिविधान भिन्न प्रकार का है, इस सत्य की उपलब्धि हमारे उपन्यास साहित्य में बहुत कम होती है।

2. द्विवेदीयुगीन आलोचना की महत्वपूर्ण विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

हिंदी की प्रगतिशील आलोचना के विकास पर विचार कीजिए।

3. हिंदी आलोचना के विकास में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के योगदान का मूल्यांकन कीजिए। (15)

अथवा

रामविलास शर्मा की आलोचना दृष्टि का विवेचन कीजिये।

4. 'दूसरा सप्तक की भूमिका' के आधार पर अज्ञेय की प्रयोग संबंधी अवधारणा का विवेचन कीजिए। (15)

अथवा

करे और ऐसी विश्व-दृष्टि का विकास करे, जिससे व्यापक जीवन-जगत की व्याख्या हो सके, तथा अंतर्जीवन के भीतर के आंदोलन, आर-पार फैली हुई वास्तविकता के सन्दर्भ से व्याख्यात, विश्लेषित और मूल्यांकित हों। तभी हम आस-पास फैली हुई मानव-वास्तविकता के मार्मिक पक्षों का उद्‌घाटन-चित्रण कर सकेंगे।

अथवा

प्रयोग का कोई वाद नहीं है। हम वादी नहीं रहे, नहीं हैं। न प्रयोग अपने-आप में इष्ट या साध्य है। ठीक इसी तरह कविता का भी कोई वाद नहीं है; कविता भी अपने-आप में इष्ट या साध्य नहीं है। अत: हमें 'प्रयोगवादी' कहना उतना ही सार्थक या निरर्थक है जितना हमें 'कवितावादी' कहना। क्योंकि यह आग्रह तो हमारा है कि जिस प्रकार कविता रूपी माध्यम को बरतते हुए आत्माभिव्यक्ति चाहने वाले कवि को अधिकार है कि उस माध्यम का अपनी आवश्यकता के अनुरूप श्रेष्ठ उपयोग करे, उसी प्रकार आत्म-सत्य के अन्वेषी कवि को, अन्वेषण के प्रयोग रूपी माध्यम का उपयोग करते समय उस माध्यम की विशेषताओं को परखने का भी अधिकार है।

P.T.O.

(ग) जब कोई कहता है कि श्कहानी ठेठ शास्त्रीय अर्थ में नयी न होकर भी अच्छी हो सकती हैश तो इस वाक्य का ठीक-ठीक अर्थ समझना कठिन लगता है। किसी कहानी का 'नयी' होकर भी 'अच्छी' न हो पाना तो समझ में आता है। किन्तु 'नयी न होकर भी अच्छी होने' का क्या मतलब है? क्या इसका मतलब है 'पुराने रूप में भी अच्छी'? लेकिन यह कौन सी साहित्यिक समझ है जो रूप और वस्तु को भिन्न समझती है? क्या रूप केवल अभिव्यक्ति का 'वाहन' है, क्या रूप वक्तव्य अन्वेषण, चिंतन और विभावन का अनिवार्य 'साधन' नहीं है?

अथवा

निस्सन्देह आज के हिंदी उपन्यास का यह सर्वेक्षण बहुत उत्साहवर्धक नहीं है। वह किसी कलात्मक परिपक्षता और शिखरत्व की पुष्टि नहीं करता। वास्तव में अभी तक हिंदी उपन्यास में व्यक्तित्व और सामाजिक जीवन अधिक-से-अधिक समानांतर चलते जान पड़ते हैं, मिलकर कोई समग्रता नहीं बनाते। जिन लेखकों में सामाजिक जीवन की गति को समझने का सामर्थ्य है, वे प्रायः उसे व्यक्ति के आंतरिक जीवन के साथ नहीं जोड़ पाते; और जो व्यक्ति मन की गहराई में पैठ सकते हैं, उनमें सामाजिक गति का बोध